GOVT. OF INDIA- RNI NO. UPBIL/2014/56766
UGC Approved Care Listed Journal
ISSN 2348-2397

B

शोध सरिता

An International Multidisciplinary Quarterly
Bilingual Peer Reviewed Refereed Research Journal

• Vol. 7 • Issue 26 (II) • April to June 2020

Editor in Chief
Dr. Vinay Kumar Sharma
D. Litt. - Gold Medalist

sanchar
Educational & Research Foundation

23.	इक्कीसवीं सदी के उपन्यासों में सृजन का बदलता यथार्थ	डॉ0 वीरेन्द्र सिंह यादव	94
24.	कोरोना वायरस (कोविड–19) का सांस्कृतिक प्रभाव : समाजशास्त्रीय पाठ	डॉ. विमल कुमार लहरी	98
25.	वैश्विक आतंकवाद : कारण, प्रभाव व निरोध की रणनीति	माला मेश्राम मनीष चन्द्रा	102
26.	इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का भाषावाद और क्षेत्रवाद	अश्विनी कुमार	106
27.	समाचार पत्रिकाओं में लोकसभा चुनाव 2019 के परिणामों की कवरेज का अध्ययन (एक अंतर्वस्तु विश्लेषण)	डॉ ओमशंकर गुप्ता	112
28.	सत्य हरिश्चंद्र : नाटक की मौलिकता	डॉ. लक्ष्मण भोसले	117
29.	सेक्स चयनात्मक गर्भपात : एक सामाजिक चिंतन व विश्लेषण	डॉ0 प्रमोद कुमार गुप्ता	121
30.	वैश्वीकरण और भारतीय समाज में हाशियाकरण का समाजशास्त्रीय पाठ	डॉ0 आशीष अंशु	129
31.	सामाजिक बहिष्करण के दृष्टिकोण से ग्रामीण समुदायों में स्वास्थ्य असमानता : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण	डॉ0 ईश्वर स्वरूप सहाय	134
32.	अथर्ववेद में उल्लिखित मनोविज्ञान एक विवेचन	डॉ0 एम0 एल0 यादव	138
33.	कार्यशील महिलाओं में भूमिका–संघर्ष की स्थिति : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (उत्तराखण्ड के रूद्रपुर शहर के बंगाली समुदाय के 50 महिलाओं के सन्दर्भ में)	संगीता रानी	141
34.	'कामायनी' : सांस्कृतिक चेतना की संवाहक	डॉ0 राधा शर्मा	145
35.	मुक्तिबोध की समीक्षा–दृष्टि : प्रमुख वैचारिक आयाम	डॉ0 ज्योति ठाकुर	149
36.	भक्ति आन्दोलन और हिन्दी आलोचना	रामाश्रय यादव	153
37.	जीवन प्रबन्धन में धम्मपद की प्रासंगिकता	डॉ0 अभिमन्यु सिंह	156
38.	नागार्जुन के उपन्यासों की भाषा	डॉ0 इन्दिरा कुमारी	160
39.	अंग्रेजी शिक्षा नीति के प्रारम्भ एवं प्रसार सम्बन्धी अध्ययन	डॉ0 रीना कुमारी	164
40.	भावी शिक्षकों की पर्यावरणीय जागरूकता एवं अभिवृत्ति पर भारतीय–संस्कृति के प्रभाव का अध्ययन	भुवनेश्वर सिंह मस्तैनया डॉ. काव्या दुबे	168
41.	डॉ0 राममनोहर लोहिया की भारत के स्वतंत्रता संघर्ष में भूमिका	डॉ0 गिरीश कुमार सिंह	173
42.	ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में निर्णय क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना (मन्दसौर जिले के सन्दर्भ में)	प्रियंका अग्रवाल डॉ. जयदीप महार	176
43.	कोविड– 19 महामारी : शीत युद्ध की उत्पत्ति से भारतीय सुरक्षा पर प्रभाव	डॉ नर्वदेश्वर पाण्डेय	180
44.	किन्नर विमर्श एवं किन्नर साहित्य	डॉ0 प्रेमलता श्रीवास्तव	186
45.	स्त्री की हृदय गाथा– "अन्या से अनन्या"	डॉ0 मीनू अवस्थी	190
46.	हिन्दी काव्य और मिथकीय सन्दर्भ	रीमा शुक्ला	195
47.	सांस्कृतिक रूपान्तरण के भीतर संस्थागत विकल्पों की तलाश	रोली यादव	200

ISSN - 2348-2397
APPROVED UGC CARE
SHODH SARITA
SHODH SARITA
Vol. 7, Issue 26 (II), April-June, 2020
Page Nos. 112-116
AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

समाचार पत्रिकाओं में लोकसभा चुनाव 2019 के परिणामों की कवरेज का अध्ययन (एक अंतर्वस्तु विश्लेषण)

डॉ० ओमशंकर गुप्ता*

शोध सारांश

लोकसभा चुनाव परिणामों को लेकर जितनी उत्सुकता देश के जनमानस में थी उतनी ही राजनेताओं और राजनीतिक दलों में थी। लेकिन जनमानस में केवल उत्सुकता थी तो राजनैतिक दलों में उत्सुकता के साथ तनाव और बेचैनी भी थी। 23 मई को परिणाम आने के बाद 24 मई को देश के प्रमुख समाचार पत्रों ने अपने अपने तरीके से परिणामों का आवरण पृष्ठ से लेकर अंदर के पृष्ठों तक बेहतरीन प्रस्तुतिकरण किया। कई समाचार पत्रों ने आंकड़ों की बाजीगरी भी दिखाई। कई समाचार पत्रों ने खबरों के साथ मूल्यांकन करने के लिए सुंदर रंगीन ग्राफिक्स और चित्रों के साथ कार्टून और रेखाचित्र भी प्रस्तुत किए। लेकिन समाचार पत्रों के प्रस्तुतिकरण में केवल सूचना की भरमार रही। कुछ समाचार पत्रों ने संक्षिप्त विश्लेषण भी देने की कोशिश की। परिणामों का गंभीर विश्लेषण, आंकड़ों का विश्लेषण, दलगत स्थिति का विश्लेषण, 2014 लोकसभा चुनाव से 2019 के चुनाव के चुनावों का तुलनात्मक विश्लेषण, चुनावी रणनीतियों का विश्लेषण, विभिन्न राजनीतिक दलों के घोषणा पत्रों और जनता के मुद्दों का चुनावों पर असर का विश्लेषण समाचार पत्रों में पाठकों को नहीं मिला। इसी कमी को समाचार पत्रिकाओं ने पूरा किया। इस मामले में देश की सबसे महंगी और पुरानी समाचार पत्रिका इंडिया टुडे, आउटलुक और गंभीर समाचार पत्रिका से बाजी मार ले गई।

Keywords : अंतर्वस्तु विश्लेषण,इंडिया टुडे, आउटलुक,लोकसभा चुनाव 2019, चुनाव परिणाम, समाचार पत्रिकाएं

भूमिका (Introduction) :

मनुष्य एक समाजिक प्राणी है। उदारीकरण और तमाम आर्थिक प्रगति के बाद भी व्यक्ति के ज्ञान के स्तर को ही उसके सामाजिक स्तर का परिचायक माना जाता है। व्यक्ति अपने आस पास से लेकर देश दुनिया तक के बारे में और अधिक जानकारी पाने की उत्कंठा रखता है। उसकी यही इच्छा उसे उन संचार माध्यमों तक पहुंच बनाने को प्रेरित करती है जो उसकी नजर के साथ उसके आस पास के लोगों की नजर में प्रमाणिक होते हैं। इसीलिए एक आम औसत पाठक सुबह की चाय से पहले समाचार पत्र हाथ में लेने की कोशिश करता है। लेकिन वह सामाजिक,राजनैतिक, आपराधिक, वैज्ञानिक, स्वास्थ्य, मौसम और सेक्स जैसी बहुत सी ऐसी घटनाओं या तथ्यों के बारे में जब गहराई, संदर्भ और विश्लेषण सहित व्याख्यात्मक जानकारी पाने की कोशिश करता है तो वह समाचार पत्र से बड़ा या बेहतर माध्यम खोजता है। उसकी इसी खोज को समाचार या विषय विशेष की पत्रिकाएं पूरी करने की कोशिश करती हैं।

साहित्य समीक्षा (literature review):

1– सौरभ मालवीय "हिन्दी समाचार पत्रों में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की प्रस्तुति का अध्ययन" नाम के विश्लेषणात्मक शोध पत्र में लिखते हैं कि– देश के प्रमुख मीडिया संस्थानों में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रति उदासीनता है। मीडिया चलाने वाले संस्थान विरोध करने को अपनी शान समझते हैं। यह सब कुछ पाठकों को पसंद हो ऐसा भी नहीं है। पाठक सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को लेकर अपनी रुचि भी दिखाते हैं। लेकिन बाजार केंद्रित पत्रकारिता के व्यावसाय में उनकी सुनवाई नहीं होती है।[1]

2. जीशान, अंतरराष्ट्रीय सामाजिक शोध पत्रिका 'इंडियन स्ट्रीम रिसर्च जर्नल' के मई, 2015 के अंक में प्रकाशित अपने शोध पत्र में लिखते हैं कि– संपादकीय पृष्ठों पर प्रकाशित संपादकीय और अग्रलेख किसी भी समाचार पत्र का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा होता है। इस पृष्ठ पर प्रकाशित सामग्री से ही समाचार पत्र की धारणा, राय और विचार पाठकों तक पहुंचते हैं। समाचार पत्रों को संपादकीय पृष्ठ पर ऐसी सामग्री प्रकाशित करनी चाहिए जिससे पाठकों में जागरूकता का स्तर बढ़ने के साथ साथ उनमें विचार करने की शक्ति भी पैदा हो।[2]

3. चंद्रशेखर प्रसाद और डॉ राजेंद्र मोहंती, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च ग्रंथालय में लिखते हैं कि – धर्म से जुड़ी हुई

*एसोसिएट सीनियर प्रोड्यूसर, सहारा

खबरों के पेज निर्धारित है, लेकिन धर्म–निरपेक्षता से सम्बंधित खबरों के लिए नहीं। कभी–कभार उचित स्थान भी नहीं मिलता है। फोटो के लिए भी स्थान कम पड़ जाता है। विज्ञापन होने के कारण खबरों से अन्याय तो होता ही है फोटो के लिए भी स्थान न के बराबर है। आस्था या किसी सम्प्रदाय से जुड़ी हुई खबरों के लिए भाषा का अभाव है।[3]

4. श्री एस अग्रवाल, 'भारतीय वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान पत्रिका' में 'पर्यावरण और समाचार माध्यम' विषय पर अपने शोध पत्र में लिखते हैं कि– समाचार पत्र पर्यावरण की खबरों की अवहेलना नही कर पा रहे हैं लेकिन समाचार पत्रों में पर्यावरण को लेकर प्रस्तुत सामग्री सागर में बूंद के समान है। पर्यावरण जैसे ज्वलंत मुद्दे को लेकर समाचार पत्रों और पत्रकारों को इस विषय पर अधिक आग्रही होना होगा। विषय विशेषज्ञो, वैज्ञानिकों को खबरों से जोडना ताकि सक्रिय तौर पर जनमानस को अधिक जागरूक बनाया जा सके।[4]

शोध के उद्देश्य (Objective) :

1. समाचार पत्रिका : श्रोत, संकलन,संपादन एवं प्रस्तुतिकरण का अध्ययन
2. समाचार पत्रिकाओं की समाचारात्मक सामग्री का विश्लेषण
3. समाचार पत्रिकाओं की विचारात्मक सामग्री का विश्लेषण
4. समाचार पत्रिकाओं की संपादकीय नीति का विश्लेषण

अध्ययन अवधि (Period of Study) :

शोध पत्र लोकसभा चुनाव परिणामों की कवरेज पर केंद्रित है। इसलिए अध्ययन के लिए चयनित समाचार पत्रिकाओं के **केवल एक–एक** अंक (इंडिया टुडे 30 मई से 5 जून, आउटलुक 3 से 16 जून, गंभीर समाचार 1 से 15 जून का अध्ययन किया गया है।

शोध प्रविधि (Research Methodology) :

प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य समाचार पत्रिकाओं की विषयवस्तु का विश्लेषण करना है। इस हेतु शोध की अंतर्वस्तु विश्लेषण पद्धति का उपयोग किया गया है।

अंतर्वस्तु विश्लेषण :

अंतर्वस्तु विश्लेषण मानव संप्रेषण को समझने, उसे व्यक्त करने, परिशोधित करने और नियोजित करने के लिए संचार शोध की एक अहम विधि मानी जाती है। वर्तमान समय में विषय वस्तु विश्लेषण, मीडिया सामग्री के आकलन तथा मीडिया के प्रभाव के अध्ययन के लिए एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में विकसित हुआ है।[5]

अंतर्वस्तु विश्लेषण संचार की प्रत्यक्ष सामग्री के विश्लेषण से संबंधित अनुसंधान की एक प्रविधि है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि संचार माध्यम द्वारा जो कहा जाता है, उसका विश्लेषण इस प्रविधि द्वारा किया जाता है।[6]

"द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान यूरोप और जर्मनी के जासूसों ने एक दूसरे के देशों के हाल जानने के लिए उन देशों के रेडियो संदेशों को सुनना शुरु किया। जासूसों ने उन संदेशों को सुनकर पहले तो उनका विश्लेषण करने की कोशिश की फिर इन संदेशों का सैनिकों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया। इसके बाद उन दोनों के बीच यानि संदेश और सैनिकों के व्यवहार में अंतरसंबंधों को जानने की कोशिश की "[7]

अंतर्वस्तु विश्लेषण की परिभाषा :

अंतर्वस्तु विश्लेषण की कई परिभाषाएं हैं और प्रत्येक में किसी न किसी घटक पर जोर दिया गया है।

किम्बर्ले ए.न्यूएनडोर्फ (2002) : ने अंतर्वस्तु विश्लेषण की छह सूत्रीय पररिभाषा दी है– 'यह संदेशों का वैज्ञानिक विधि पर आधारित संक्षिप्तीकृत मात्रात्मक विश्लेषण होता है और यह मापे जा सकने वाले परिवर्तनशील तत्वों,संदर्भों के उन प्रकारों तक सीमित नहीं होते, जिनमें संदेश बनाए या प्रस्तुत किए जाते हैं।"

बर्नार्ड बेरेल्सन (1971) : "अंतर्वस्तु विश्लेषण संचार के व्यक्त संदर्भ के विषयात्मक, क्रमबद्ध, परिणामात्मक वर्णन की एक अनुसांधान प्रविधि है।"[8]

अरथर असा बर्जर– "अंतर्वस्तु विश्लेषण लोगों पर परीक्षण करके उनके बारे में कुछ जानने का साधन है। जो लोग लिखते हैं, टीवी के लिए कुछ उत्पादित करते हैं या फिल्म बनाते हैं उन पर परीक्षण करके उनके बारे में जानने का साधन है अंतर्वस्तु "[9]

विश्लेषण (Analysis) : तालिका एक – पत्रिकाओं का परिचय

क्र.सं.	पत्रिका	संपादक	कुल पृष्ठ	प्रकाशन स्थल	मूल्य
1	इंडिया टुडे	अंशुमान तिवारी	92	दिल्ली	40
2	आउटलुक	हरवीर सिंह	68	दिल्ली	25
3	गंभीर समाचार	अजय कुमार मोहता	52	कोलकाता	20

तालिका दो– चुनाव परिणाम की खबरों के श्रोत

क्र.सं.	पत्रिका	कुल खबरें(पृष्ठों में)	कुल विज्ञापन (पृष्ठों में)	संवाददाता की रिपोर्ट	मेहमान लेखक के लेख
1	इंडिया टुडे	77	10	41	3
2	आउटलुक	47	9	15	8
3	गंभीर समाचार	32	5	9	6

तालिका तीन – चुनाव परिणाम की खबरों का प्रतिशत

क्र.सं	पत्रिका	कुल खबरें	चुनाव परिणाम की कुल खबरें	प्रतिशत
1	इंडिया टुडे	47	41	87
2	आउटलुक	22	15	68
3	गंभीर समाचार	33	4	12

चुनाव परिणामों को लेकर इंडिया टुडे पत्रिका का प्रबंधन काफी उत्साहित दिखा। इसीलिए लिविंग मीडिया समूह ने इंडिया टुडे हिंदी का परिणामों पर आधारित " जनादेश 2019" विशेषांक प्रकाशित किया। इसके आवरण पृष्ठ पर नरेंद्र मोदी की फोटो के साथ " मोदीमय भारत" शीर्षक दिया गया। जिस तरह का शीर्षक दिया गया उससे सहज ही ये अंदाजा हो जाता है कि बीजेपी, मोदी, चुनाव 2019 के बारे में वह सबकुछ इस पत्रिका में होगा जो समाचार पत्रों में नही था। विशेषांक था तो स्वाभाविक है कि इसमें चुनाव परिणाम, उसके निहितार्थों का आकलन और विश्लेष्ण भी होगा। विषय सूची को देखकर इसकी पुष्टि हो गई।आवरण कथा राज चेंगप्पा ने लिखी। "मोदी का नया गणराज्य" शीर्षक से लिखे इस आलेख में लेखक ने बीजेपी की जीत को मोदी की जीत दर्शाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। इस आलेख में हर तरह के कंटेंट को खूबसूरती से इस्तेमाल किया गया। चुनाव अभियान, उसके बाद आए परिणाम, उसमें मोदी का योगदान और आखिर में बीजेपी और मोदी को नसीहत यानि वह सबकुछ था जो एक आलेख को संपूर्ण बनाते हैं। 6 पृष्ठों के इस आलेख में शुरू से लेकर आखिर तक तारतम्यता और संपूर्णता दिखी।

इस आलेख में मूल्य वर्धन के लिए मोदी की बड़ी फोटो, भारत का मानचित्र भागवा रंग में साराबोर भारत शीर्षक के साथ और टेबल ग्राफिक्स का खूबसूरत मिश्रण किया गया। राज चेंगप्पा ने आलेख की शुरुआत कुछ इस तरह की मानो वो परिणामों की घोषणा वाले दिन मोदी के आस पास रहे हों। आलेख में जिस तरह के शब्दों का प्रयोग किया गया उसे पढ़कर ऐसा लगता है जैसे पाठक स्वयं मोदी के आस पास रहा है।

प्रधानमंत्री ने विनम्रता के साथ स्वीकार किया है कि उन्होने अपने पहले कार्यकाल में कई गलतियां की है"[10] "मोदी को इतिहास पर ध्यान देना चाहिए। लोगो के उस विश्वास को पूरा करने की कोशिश करनी चाहिए जो लोगों ने उनमें जताया है "[11] इंडिया टुडे ने ज़बरदस्त जनादेश के पीछे की कहानी इंडिया टुडे एक्सिस माइ इंडिया के एक्जट पोल के आंकड़ों के जरिए समझाने की कोशिश की। राज्यवार कांग्रेस, बीएसपी–एसपी जैसे क्षेत्रीय दलों के प्रदर्शन के ऊपर भी पत्रिका ने खासतौर पर नजर डाली और विश्लेषण किया।

आउटलुक समाचार पत्रिका में इंडिया टुडे के मुकाबले चुनाव परिणामों की खबरें कम रही। 68 पृष्ठों की पत्रिका के 47 पृष्ठों में कुल 15 चुनाव परिणाम की खबरें और 8 लेख प्रकाशित किए गए। आउटलुक में आवरण पृष्ठ पर मोदी के शपथ ... के साथ सरकार 2.0 का आकर्षक शीर्षक दिया गया। ... यह शीर्षक कई समाचार पत्रो और टीवी चौनलों में भी ... अंदर के 12वें पृष्ठ पर आवरण कथा "जनादेश 2019 ... समीकरणों की सरकार" प्रस्तुत की गई। इंडिया टुडे के ... आउटलुक में भी आवरण पृष्ठ और आवरण कथा के शीर्षक ... अलग रहे। यह पत्रिका पाक्षिक अवधि की है इसलिए इसमें ... परिणामों के विश्लेषण की जगह मोदी सरकार के शपथ ... उनके मंत्रिमंडल के गठन और विभागों के बंटवारे ... मंत्रिमंडल के लिए राजनैतिक समीकरणों पर विश्लेषण ... रिपोर्ट लिखी गई। इस खबर के महत्व का संकेत इस बात ... लग जाता है कि इसे पत्रिका दो संवाददताओं की मदद से ... संपादक हरवीर सिंह ने लिखा। आंकड़ों से बचते हुए ... दिग्गजों की जमात, विदा हुए दिग्गज और नए चेहरों की ... शीर्षक के तहत उन बड़े नामों पर संक्षेप में रौशनी डाली ... खबर को इस नजरिए के साथ लिखा गया कि सरकार के ... अब कौन सी नई चुनौतियां हैं और उनसे उसे कैसे ... होगा। इसके बाद नतीजों का फलसफा शीर्षक के साथ ... परिणामों पर एक विश्लेषणात्मक,संपादकीय रूप से कसी हुई ... किताबी शैली में खबर लिखी गई। " बीजेपी की 2019 लोक... चुनावों में धुंआधार जीत को सामान्य तर्क और पारंपरिक ... समझ पाना आसान नही है... इसके रहस्य के दो सूत्र तो ... एक, पुलवामा और बालाकोट के बाद उन्मादी राष्ट्रवाद की ... दूसरा सहयोगी दलों के आगे झुक कर भी गठजोड़ करने ... रणनीति"[12] इस आलेख में मर्दाना या दबंग राष्ट्रवाद का ... अफसाना जैसे शब्दो का इस्तेमाल बताता है कि खबर ... विचारधारात्मक आग्रह के साथ विश्लेषण किया गया। तथ्यों ... आधार तो बनाया गया लेकिन सुविधानुसार तथ्यों का इस्तेमाल ... किया गया। कंटेट में मूल्यवर्धन के लिए आंकड़ों का पाई ... के ग्राफिक्स के रूप में खूबसूरत प्रस्तुतिकरण किया गया लेकिन ... आंकड़ों के श्रोत की जानकारी नही दी गई। कई राज्यों ... संवाददाताओं की तथ्यपरक विश्लेषणात्मक कंटेंट वाली ... सराहनीय रही जो पाठकों को जरूर पसंद आई होंगी। चुनाव ... परिणामों पर जो मेहमान लेखकों के लेख दिए गए वो मिले जुले ... कंटेंट वाले रहे। जैसे "बेजोड़ रणनीति की कामयाबी" शीर्षक ... फइनेंसियल क्रानिकल के पूर्व संपादक ने लेख लिखा वो बीजेपी ... की रणनीति की बारीकियों को उजागर करने वाला और विपक्ष ...

राज्य, जाति, पेशा,महिला, पुरुष,रोजगार, राष्ट्रवाद सहित कई स्थापित और नए मानकों पर निष्पक्ष या तटस्थ भाव से समीक्षा की। पक्ष और विपक्ष में लिखने के तर्क भी रखे। मूल्य वर्धन के लिए वर्तमान चुनावी परिणामों के अलावा पिछले लोकसभा और 5 राज्यों के विधानसभा चुनाव परिणामों के तुलनात्मक आंकड़ों का ग्राफिक्स के जरिए सजीव चित्रण करने की कोशिश की। खबरों, आलेखों के साथ विचारधारा का घालमेल का स्तर न्यून रहा। आंकड़ों के श्रोत भी दिए गए। आउटलुक में परिणामों को लेकर जो रिपोर्ट, लेख, आलेख दिए गए उनमें तटस्थता जो पत्रकारिता का मूल भाव है वह इंडिया टुडे के मुकाबले कम देखने को मिला। खासतौर पर लेखकों के लेख विचारधारा (वाम मार्गी)विशेष से पगे से लगे। आउटलुक में खबरों, आलेखों को पुष्ट करने के लिए आंकड़ों की बाजीगरी कम देखने को मिली। विश्लेषण में चित्रों का खूबसूरत प्रयोग किया गया। कुछ जगह आंकड़े भी ग्राफिक्स के जरिए दिए गए। लेकिन आंकड़ों के श्रोत की जानकारी नहीं दी गई। गंभीर समाचार नई पत्रिका है। इसके कारण उदारता से इसके कंटेंट का विश्लेषण किया गया। गंभीर समाचार में रिपोर्ट, आलेख और लेख तीनो श्रेणियों में चुनाव परिणाम की खबरें दी गई। लेकिन आंकड़ों और ग्राफिक्स जैसे मूल्य वर्धन से परहेज किया गया। पत्रिका ने परिणामों के निहितार्थ यानि विस्तार से विश्लेषण देने की कोशिश आधे मन से की। हालांकि गंभीर समाचार में खबरों का प्रस्तुतिकरण नयापन लिए दिखा जो भविष्य में और बेहतर कटेंट वाली पत्रिका होने की उम्मीद जरुर जगाता है।

सन्दर्भ :–

1. सौरभ मालवीय "हिन्दी समाचार पत्रों में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की प्रस्तुति का अध्ययन" https://hi-wikibooks-org/---/fgUnh_lekpkj_i=ksa_esa_---lkaL—frdjk"Vªokn
2. जीशान, अंतरराष्ट्रीय सामाजिक शोध पत्रिका 'इंडियन स्ट्रीम रिसर्च जर्नल' के मई, 2015 http://isrj.org/Article.aspx?ArticleID=6584#abstract
3. चंद्रशेखर प्रसाद और डॉ राजेंद्र मोहंती, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च ग्रंथालय http://granthaalayah.com/Articles/Vol4Iss6/18_IJRG16_B05_98.pdf
4. बी एस अग्रवाल, 'भारतीय वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान पत्रिका' 'पर्यावरण और समाचार माध्यम' http://nopr.niscair.res.in/bitstream/123456789/30257/
5. मुखर्जी, आर. एन., (2007), सामाजिक शोध व सांख्यिकी, विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली, पृष्ठ 333

6. दयाल, मनोज, (2010) मीडिया शोध, प्रकाशक,हरियाणा साहित्य अकादमी पंचकूला, पृ. सं.1से 16.
7. मुखर्जी,आर एन, (2006), सामाजिक शोध व सांख्यिकी, विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली.
8. त्रिवेदी, डॉ. आर. एन., (2006): रिसर्च मैथेडोलॉजी, डॉ. डी. पी. शुक्ला कॉलेज बुक डिपो, पृ.सं.370, जयपुर
9. मुखर्जी,आर एन, (2006), सामाजिक शोध व सांख्यिकी, विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली.
10. राज चेंगप्पा, (2019) मोदी का नया
इंडिया टुडे,लिविंग मीडिया, इंडिया लिमिटेड,
11. राज चेंगप्पा, (2019), मोदी का नया
इंडिया टुडे,लिविंग मीडिया, इंडिया लिमिटेड,
12. हरिमोहन मिश्र, (2019), नतीजों का
17 जून, पृष्ठ 19, दिल्ली
13. पोलिटिकल ब्यूरो, (2019)," लो जी मैं
15 जून, पृष्ठ 17 , गंभीर समाचार, कलकत्ता
14. अजय कुमार मोहता, (2019) संपादकीय,
जून, गंभीर समाचार कोलकाता

❐❐❐